International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 2, March 2021 |

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी साहित्य की भूमिका

Dheeraj Kumar Gupta

Assistant Professor, Department of Hindi, Govt. College, Kaman, Bharatpur, Rajasthan, India

सार: साहित्य ने लोगों को स्वतंत्रता के महत्व के बारे में बताया और इस प्रकार उन्हें देश की स्वतंत्रता के लिए अपना सब कुछ त्यागने के लिए प्रेरित किया। देशभक्ति की कविता, उपन्यास, नाटक और लघु कथाओं ने लोगों में देशभक्ति की भावना भर दी जो ब्रिटिश शासन के खिलाफ महान हथियार साबित हुई।

I. परिचय

यह सभी जानते हैं कि 15 अगस्त 1947 को हमारा देश स्वतंत्र हुआ। यह हमारे राष्ट्रीय जीवन में हर्ष और उल्लास का दिन तो है ही, इसके साथ ही स्वतंत्रता की खातिर अपने प्राण न्योछावर करने वाले शहीदों का पुण्य दिवस भी है। देश की स्वतंत्रता के लिए 1857 से लेकर 1947 तक क्रांतिकारियों व आंदोलनकारियों के साथ ही लेखकों, कवियों और पत्रकारों ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।[1,2,3]

उनकी गौरव गाथा हमें प्रेरणा देती है कि हम स्वतंत्रता के मूल्य को बनाए रखने के लिए कृत संकल्पित रहें। प्रेमचंद की रंगभूमि, कर्मभूमि (उपन्यास), भारतेंदु हरिश्चंद्र का भारत-दर्शन (नाटक), जयशंकर प्रसाद का चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त (नाटक) आज भी उठाकर पढ़िए, देशप्रेम की भावना जगाने के लिए बड़े कारगर सिद्ध होंगे। वीर सावरकर की '1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम' हो या पंडित नेहरू की 'भारत एक खोज' या फिर लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की 'गीता रहस्य' या शरद बाबू का उपन्यास 'पथ के दावेदार' - जिसने भी इन्हें पढ़ा, उसे घर-परिवार की चिंता छोड़ देश की खातिर अपना सर्वस्व अर्पण करने के लिए स्वतंत्रता के महासमर में कूदते देर नहीं लगी। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत-भारती' में देशप्रेम की भावना को सर्वोपरि मानते हुए आह्वान किया :

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।

वह नर नहीं, नर-पशु निरा है और मृतक समान है।।

देश पर मर मिटने वाले वीर शहीदों के कटे सिरों के बीच अपना सिर मिलाने की तीव्र चाहत लिए सोहन लाल द्विवेदी ने कहा :

हो जहां बलि शीश अगणित, एक सिर मेरा मिला लो।

वहीं सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झांसी की रानी' कविता को कौन भूल सकता है, जिसने अंग्रेजों की चूलें हिला कर रख दी। वीर सैनिकों में देशप्रेम का अगाध संचार कर जोश भरने वाली अनूठी कृति आज भी प्रासंगिक है :

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,

बूढ़े भारत में भी आई, फिर से नई जवानी थी,

गुमी हुई आजादी की, कीमत सबने पहिचानी थी,

दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,

चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी,

बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।

'पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं' का मर्म स्वाधीनता की लड़ाई लड़ रहे वीर सैनिक ही नहीं वफादार प्राणी भी जान गए, तभी तो पं. श्याम नारायण पांडेय ने महाराणा प्रताप के घोड़े 'चेतक' के लिए 'हल्दी घाटी' में लिखा :

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 2, March 2021 |

रणबीच चौकड़ी भर-भरकर, चेतक बन गया निराला था,

राणा प्रताप के घोड़े से, पड़ गया हवा का पाला था,

गिरता न कभी चेतक तन पर, राणा प्रताप का कोड़ा था,

वह दौड़ रहा अरि मस्तक पर, या आसमान पर घोड़ा था।

देशप्रेम की भावना जगाने के लिए जयशंकर प्रसाद ने 'अरुण यह मधुमय देश हमारा', सुमित्रानंदन पंत ने 'ज्योति भूमि, जय भारत देश', निराला ने भारती! जय विजय करे। स्वर्ग सस्य कमल धरे', कामता प्रसाद गुप्त ने 'प्राण क्या हैं देश के लिए, देश खोकर जो जिए तो क्या जिए', इकबाल ने 'सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा', तो बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने 'विप्लव गान' में कहा :

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए

एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर को जाए

नाश ! नाश! हां महानाश! ! ! की

प्रलयंकारी आंख खुल जाए।

इन कवियों ने यह वीर रस वाली कविताएं सृजित कर रणबांकुरों में नई चेतना का संचार किया। इसी श्रृंखला में शिवमंगल सिंह 'सुमन', रामनरेश त्रिपाठी, रामधारी सिंह 'दिनकर', राधाचरण गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन, राधाकृष्ण दास, श्रीधर पाठक, माधव प्रसाद शुक्ल, नाथूराम शर्मा शंकर, गया प्रसाद शुक्ल स्नेही (त्रिशूल), माखनलाल चतुर्वेदी, सियाराम शरण गुप्त, अज्ञेय जैसे अगणित कवियों के साथ ही बंकिम चंद्र चटर्जी का देशप्रेम से ओत-प्रोत 'वंदे मातरम' गीत आजादी के परवानों को प्रेरित करता है। 'वंदे मातरम' आज हमारा राष्ट्रीय गीत है, जिसकी श्रद्धा, भक्ति व स्वाभिमान की प्रेरणा से लाखों युवक हंसते-हंसते देश की खातिर फांसी के फंदे पर झूल गए। वहीं हमारे राष्ट्रगान 'जन गण मन अधिनायक' के रचयिता रवींद्र नाथ ठाकुर का योगदान अद्वितीय व अविस्मरणीय है। स्वतंत्रता दिवस के सुअवसर पर बाबू गुलाबराय का कथन समीचीन है – '15 अगस्त का शुभ दिन भारत के राजनीतिक इतिहास में सबसे अधिक महत्त्व का है। [4,5,6]आज ही हमारी सघन कलुष-कालिमामयी दासता की लौह श्रृंखला टूटी थी। आज ही स्वतंत्रता के नवोज्ज्वल प्रभात के दर्शन हुए थे। आज ही दिल्ली के लाल किले पर पहली बार यूनियन जैक के स्थान पर सत्य और अहिंसा का प्रतीक तिरंगा झंडा स्वतंत्रता की हवा के झोंकों से लहराया था। आज ही हमारे नेताओं के चिरसंचित स्वप्न चरितार्थ हुए थे। आज ही युगों के पश्चात् शंख-ध्वनि के साथ जयघोष और पूर्ण स्ततंत्रता का उद्घोष हुआ था।' 'ऐ मेरे वतन के लोगो ज़रा आंख में भर लो पानी' गीत को याद करते हुए सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख वचन और नारे
भारत के स्वतंत्रता संग्राम में नारों की विशेष भूमिका है। स्वतंत्रता के लिए बोले गए हर नारे ने भारतीय क्रांतिकारियों में ऐसी जान फूंक दी कि हर नारा अंग्रेजों के ताबूत में आखिरी कील साबित हुआ। यहां स्वतंत्रता संग्राम के समय के कुछ ऐसे ही नारों का हम ब्योरा दे रहे हैं :

इन्कलाब जिंदाबाद : भगत सिंह

दिल्ली चलो : सुभाष चंद्र बोस

करो या मरो : महात्मा गांधी

जय हिंद : सुभाष चंद्र बोस

पूर्ण स्वराज्य :

जवाहर लाल नेहरू

हिंदी, हिंदू, हिंदोस्तान :

भारतेंदु हरिश्चंद्र

वेदों की ओर लौटो :

दयानंद सरस्वती

आराम हराम है :

जवाहर लाल नेहरू
हे राम : महात्मा गांधी

भारत छोड़ो : महात्मा गांधी

जय जवान, जय किसान :

लाल बहादुर शास्त्री

मारो फिरंगी को : मंगल पांडे

जय जगत : विनोबा भावे

कर मत दो :

सरदार वल्लभ भाई पटेल

संपूर्ण क्रांति :

जयप्रकाश नारायण

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा : श्याम लाल गुप्ता पार्षद

वंदे मातरम् : बंकिमचंद्र चटर्जी

जन-गण-मन अधिनायक जय हे : रवींद्र नाथ टैगोर

साम्राज्यवाद का नाश हो :

भगत सिंह

स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है :

बाल गंगाधर तिलक

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है :

राम प्रसाद बिस्मिल

सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा : अल्लामा इकबाल

तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा : सुभाष चंद्र बोस

साइमन कमीशन वापस जाओ : लाल लाजपत राय

हू लिव्स इफ इंडिया डाइज : जवाहर लाल नेहरू

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 2, March 2021 |

मेरे सिर पर लाठी का एक-एक प्रहार, अंग्रेजी शासन के ताबूत की कील साबित होगा :

लाला लाजपत राय

मुसलमान मूर्ख थे, जो उन्होंने सुरक्षा की मांग की और हिंदू उनसे भी मूर्ख थे, जो उन्होंने उस मांग को ठुकरा दिया : अबुल कलाम आजाद

इन कविताओं से आती है वतन की खुशबू
15 अगस्त को हम आजादी की नई वर्षगांठ मनाने जा रहे हैं। आजादी के इस सुखद एहसास के बीच हम लाए हैं आपके लिए छह ऐसी कविताएं, जिनसे मिलती है अपने वतन की खुशबू…

पुष्प की अभिलाषा : माखनलाल चतुर्वेदी
चाह नहीं मैं सुरबाला के, गहनों में गूंथा जाऊं

चाह नहीं, प्रेमी-माला में, बिंध प्यारी को ललचाऊं

चाह नहीं, सम्राटों के शव, पर हे हरि, डाला जाऊं

चाह नहीं, देवों के सिर पर, चढ़ूं भाग्य पर इठलाऊं।

मुझे तोड़ लेना वनमाली!, उस पथ पर देना तुम फेंक,

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।

आह्वान : अशफाकउल्ला खां

कस ली है कमर अब तो, कुछ करके दिखाएंगे,

आजाद ही हो लेंगे, या सर ही कटा देंगे

हटने के नहीं पीछे, डरकर कभी जुल्मों से

तुम हाथ उठाओगे, हम पैर बढ़ा देंगे

बेशस्त्र नहीं हैं हम, बल है हमें चरख़े का,

चरख़े से ज़मीं को हम, ता चर्ख़ गुंजा देंगे

परवाह नहीं कुछ दम की, ग़म की नहीं, मातम की,

है जान हथेली पर, एक दम में गंवा देंगे

उफ़ तक भी जुबां से हम हरगिज़ न निकालेंगे

तलवार उठाओ तुम, हम सर को झुका देंगे

सीखा है नया हमने लड़ने का यह तरीका

चलवाओ गन मशीनें, हम सीना अड़ा देंगे…

आजादी : राम प्रसाद बिस्मिल

इलाही ख़ैर! वो हरदम नई बेदाद करते हैं,

हमें तोहमत लगाते हैं, जो हम फ़रियाद करते हैं

कभी आज़ाद करते हैं, कभी बेदाद करते हैं

मगर इस पर भी हम सौ जी से उनको याद करते हैं

असीराने-क़फ़स से काश, यह सैयाद कह देता

रहो आज़ाद होकर, हम तुम्हें आज़ाद करते हैं

रहा करता है अहले-ग़म को क्या-क्या इंतज़ार इसका

कि देखें वो दिले-नाशाद को कब शाद करते हैं

यह कह-कहकर बसर की, उम्र हमने क़ैदे-उल्फ़त में

वो अब आज़ाद करते हैं, वो अब आज़ाद करते हैं

सितम ऐसा नहीं देखा, जफ़ा ऐसी नहीं देखी,

वो चुप रहने को कहते हैं, जो हम फ़रियाद करते हैं

यह बात अच्छी नहीं होती, यह बात अच्छी नहीं करते

हमें बेकस समझकर आप क्यों बरबाद करते हैं?

कोई बिस्मिल बनाता है, जो मक़तल में हमें 'बिस्मिल'

तो हम डरकर दबी आवाज़ से फ़रियाद करते हैं

मेरा वतन वही है : इकबाल

चिश्ती ने जिस ज़मीं पे पैग़ामे हक़ सुनाया

नानक ने जिस चमन में बदहत का गीत गाया

तातारियों ने जिसको अपना वतन बनाया

जिसने हेजाजियों से दश्ते अरब छुड़ाया

मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है

सारे जहां को जिसने इल्मो-हुनर दिया था,

यूनानियों को जिसने हैरान कर दिया था

मिट्टी को जिसकी हक़ ने ज़र का असर दिया था

तुर्कों का जिसने दामन हीरों से भर दिया था

मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है…

जिस देश में गंगा बहती है : शैलेंद्र

होठों पे सच्चाई रहती है, जहां दिल में सफ़ाई रहती है

हम उस देश के वासी हैं, हम उस देश के वासी हैं

जिस देश में गंगा बहती है

मेहमां जो हमारा होता है, वो जान से प्यारा होता है

ज़्यादा की नहीं लालच हमको, थोड़े में गुज़ारा होता है

बच्चों के लिए जो धरती मां, सदियों से सभी कुछ सहती है

हम उस देश के वासी हैं, हम उस देश के वासी हैं

जिस देश में गंगा बहती है…

मेरे देश की आंखें : अज्ञेय

नहीं, ये मेरे देश की आंखें नहीं हैं

पुते गालों के ऊपर

नकली भवों के नीचे

छाया प्यार के छलावे बिछाती

मुकुर से उठाई हुई

मुस्कान मुस्कुराती

ये आंखें

नहीं, ये मेरे देश की नहीं हैं…

तनाव से झुर्रियां पड़ी कोरों की दरार से

शरारे छोड़ती घृणा से सिकुड़ी पुतलियां

नहीं, ये मेरे देश की आंखें नहीं हैं…

और कितने काल-सागरों के पार तैर आईं

मेरे देश की आंखें…[7,8,9]

II. विचार-विमर्श

मुंशी प्रेमचंद्र, माखनलाल चतुर्वेदी, महावीर प्रसाद द्विवेदी, भारतेंदु हरिश्चंद्र, बाल कृष्ण शर्मा नवीन, सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर आदि अनेकों हिंदी साहित्यकारों ने विभिन्न भावनाओं में राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण उत्कृष्ट साहित्य का सृजन किया। इन सबकी पीढ़ियों ने राष्ट्रीयता के विकास में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया। हिंदी साहित्यकार की पीढ़ियों ने उदास लोगों को जगाने और क्रूर ब्रिटिश तानाशाह के खिलाफ उठने का सफल आह्वान किया। हिंदी साहित्यकारों की न जाने कितनी जड़ों पर अंग्रेजों ने रोक लगा दी न जाने कितने साहित्य लेखन की कोशिश की, परन्तु उनकी लेखनी सदा एक सच्चे क्रांतिकारी की स्वतंत्रता आंदोलन में विस्फोटक का कार्य करती हैं। हिन्दी साहित्यकारों की लेखनी का यही जज्बा स्वतंत्रता को प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 2, March 2021 |

यह बात पूरी तरह सही है। जब हमारा देश पराधीनता की आधारशिला में जकड़ा हुआ था और उनसे मुक्ति के लिए संघर्ष कर रहा था, तब हमारे देश के साहित्य और साहित्यकार भी देश के लिए संघर्ष की उस भावना को और भी अधिक तीव्र करने का कार्य कर रहे थे।
इस पृथ्वी पर संभवतः ही कोई मनुष्य होगा जिसे उसका राष्ट्र, अपनी जन्मभूमि से प्रेम न हो।
रामायण में भी श्रीराम ने कहा है-
अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।
मैं उन सभी देशभक्तों को नमन करता हूँ। इन रोड़ से-
जो मुर्दा लाशों को लड़े का पाठ पढ़ाते हुए उतरे थे, जो आज़ादी के मतवालों का जोश बढ़ाते हुए आये थे, मैं आया हूँ उन अपराधियों पर फूल चढ़ाने।
स्वतंत्रता के इस महायज्ञ में समाज के प्रत्येक वर्ग ने अपने-अपने तरीके से बलिदान दिया। इस स्वतंत्रता के युग में साहित्यकारों और लेखकों ने भी अपना भरपूर योगदान दिया। जब हमारे देश में स्वतंत्रता आंदोलन का यज्ञ आरंभ हुआ तो लगभग हर प्रांत के, हर भाषा के साहित्यकारों और लेखकों ने अपनी मूर्धन्य लेखनी द्वारा देश और अपने क्षेत्र के लोगों से अपनी-अपनी आहुतियाँ डालने का आह्वान किया।

अन्य भाषाओं के रचनाकारों की तरह संस्कृत की कविताओं की लेखनी ने भी अपने राष्ट्र के नवजवानों को जागरूक करने का कार्य किया। अपने दृश्य-श्रव्य काव्य के माध्यम से जनमानस के हृदय में राष्ट्रीय भावनाओं की उत्पत्ति होती है। परतन्त्रता की आधारशिला में जकड़ी भारतमाता को स्वतंत्र बनाने के लिए इन कविताओं ने अपनी जड़ों द्वारा लोगों के मस्तिष्क को झकझोर दिया। इस राष्ट्र को स्वतंत्र बनाने में इन सभी भाषा लेखकों का महान योगदान रहा है।

रामनाथ तर्करत्न – आपका जन्म 1840 ई. यह लगभग बंगाल के शांतिपुर नामक स्थान पर स्थित था।
लेखिका ने अपनी कविता में लिखा है कि- पराधीन व्यक्ति की वीरता को नष्ट कर देती है। दस्ता व्यक्ति के लिए एक अभिशाप है।
हिंसास्ति शौर्यं सुरुचिं रुणद्धि भिन्नत्तिचित्तं विवृणोति वित्तम्। पिंस्तिं नीतिञ्च युनक्ति दास्यं हा परतन्त्र्यं निरयं व्यनक्ति।।
कवि पुन: लिखा है कि-
पराधीनता से अच्छा है, मृत्यु हो जाए।[10,11,12]
असुव्यपायेष्व पि नो जाहीम: स्वतन्त्रतामन्त्रमतन्द्रिणोऽद्य। उपागतयां प्रतितन्त्रतायां यशोन्नानां शरणं हि मृत्यु:।।
पंडिता क्षमाराव यह संस्कृत के अतिरिक्त मराठी और अंग्रेजी में भी रचनाएँ करती थीं। उनकी राष्ट्रभक्तिपरक की 3 रचनाएँ हैं- सत्याग्रहगीता, उत्तरसत्याग्रहगीता और स्वराज्यविजय:।
सत्याग्रह गीता (महाकाव्य) में उन्होंने 1931-1944 ई.तक की घटनाओं का वर्णन किया है। यह तीनफ़ोटो में विभक्त है। इसमें अनुष्टुप छंद का प्रयोग हुआ है।
काव्य रचनाएँ हैं कि-मैं भले ही मन्दबुद्धि की हूँ, लेकिन मैं अपने राष्ट्र से प्रेम करती हूँ और उसका यशोगान करती हूँ। तथापि देशभक्त्याऽहं जाताऽस्मि विवशीकृता। अत एवास्मि तद्गातुमुद्यता मन्दधीरपि।।

स्वतंत्रता आंदोलन भारतीय इतिहास का वह युग है, जो पीड़ा, कष्ट, दंभ, आत्म सम्मान, गर्व, गौरव तथा सबसे अधिक शहीदों के लहू को समेटे है। नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी के विषय में कविता है- संसार नमन करता छोटा ऐसा कर्मठ युग नेता था, अपना सुभाष जग का सुभाष भारत का सच्चा नेता था सीमा प्रांत की धरती का रत्न शहीद हरकिशन 9 जून 1931 को मियां वाली जेल में (पाकिस्तान)) फांसी पर लटका दिया गया। उनके विषय में कवि ने क्या सुंदर लिखा है-

हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रहकर हमको भी माँ-बाप ने पाला था दु:ख सहकर। प्रेमचंद की 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि' उपन्यास हो या भारतेंदु हरिश्चंद्र का 'भारत-दर्शन' नाटक या जयशंकर प्रसाद का 'चंद्रगुप्त' - सभी देशप्रेम की भावना से भरी पड़ी है। इसके अलावा वीर सावरकर की '1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम' हो, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की 'गीता रहस्य' या शरद बाबू का उपन्यास 'पथ के आवेदक' ये सभी पुस्तकें ऐसी हैं, जो लोगों में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने में सिद्ध होती हैं।

भारत की राष्ट्रीयता का आधार राजनीतिक एकता और सांस्कृतिक एकता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने जिस आधुनिक युग की शुरुआत की थी, उनकी मूल स्वाधीनता आंदोलन में ही थे। भारतेंदु और भारतेंदु मंडल के साहित्यकारों ने युग चेतना को पद्य और गद्य दोनों में अभिव्यक्ति दी। इसके साथ ही इन साहित्यकारों ने स्वाधीनता संग्राम और सेनानियों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए भारत के स्वर्णिम अतीत में लोगों की आस्था जगाने का प्रयास किया। भारतेंदु हरिश्चंद्र हिंदी के पक्ष में अलख जाग रहे थे: निज भाषा विकास अहै सब भाषा को मूल। वहीं दूसरी ओर उन्होंने अंग्रेजों की शोषणकारी नीतियों का खुलकर विरोध किया। उन्हें इस बात का ख़ौफ़ था कि अंग्रेज यहां से सारी संपत्ति लूटकर विदेश ले जा रहे थे।

इस लूटपाट और भारत की बदहाली पर उन्होंने काफी कुछ लिखा। 'अंधेर नगरी चौपट राजा' नामक उपन्यास के माध्यम से भारतेंदु ने प्राचीन राजाओं की निरंकुशता और उनकी मूढ़ता का सटीक वर्णन किया है। उन्होंने लिखा है:- 'भीतर भीतर सब रस चुसै, हंसी

हंसी के तन मन धन मुसै।' जाहिर बातों में अति तेज, क्यों सखी साजन, न सखी अंगरेज़।' द्विवेदी युग के साहित्यकारों ने भी स्वाधीनता संग्राम में अपनी लेखनी द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, श्रीधर पाठक, माखनलाल चतुर्वेदी आदि इन कविताओं ने आम जनता में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने तथा उन्हें स्वाधीनता आंदोलन का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित किया। मैथिलीशरण गुप्त ने भारतवासियों को स्वर्णिम अतीत की याद दिलाते हुए वर्तमान और भविष्य को बुरा कहने की बात कही:-राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत-भारती' में लिखा- 'हम क्या थे, क्या हैं, और क्या होंगे अभी आओ विचारे मिलकर ये खबरें सभी।' ' निज गौरव तथा निज देश का अभिमान नहीं है। वह नर नहीं, नर-पशु निरा है और मृत समान है।।'

तो वहीं माखनलाल चतुर्वेदी ने 'पुष्प की अभिलाषा' को जोड़ते हुए कहा कि 'पुष्प की अभिलाषा' के भाव से हम सभी जनमानस में सेनानियों के प्रति सम्मान जागृत होंगे। सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झांसी की रानी' कविता ने अंग्रेजों को ललकारने का काम किया:- चमकती सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी, बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़कियाँ मर्दानी वह तो झांसी की रानी थी।' पं. श्याम नारायण पाण्डेय ने महाराणा प्रताप के घोड़े 'चेतक' के लिए 'हल्दी घाटी' में लिखा:- 'रणबीच चौकड़ी भर-भरकर, चेतक बन गया निराला था राणा प्रताप के घोड़े से, पड़ गया हवा का पाला था गिरता न कभी चेतक तन पर, राणा प्रताप का कोड़ा वह अरि मस्तक पर दौड़ रहा था, या आकाश पर घोड़ा था।'

जयशंकर प्रसाद ने 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' सुमित्रानंदन पंत ने 'ज्योति भूमि, जय भारत देश।' मुंशी प्रेमचंद ने कहा, 'सारे जहां से अच्छा हिदुस्तां हमारा', वे स्वतंत्रता आंदोलन में भी अपनी भागीदारी के माध्यम से एक नई ताकत और एक नई ऊर्जा का संचार किया। आंदोलन में आक्रामक का काम करती रही। उन्होंने लिखा:- 'मैं विद्रोही हूं जग में विद्रोह कराने आया हूं, क्रांति-क्रांति का सरल सुनहरा राग सुनाने आया हूं।

प्रेमचंद की कहानियों में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ एक तीव्र विरोध तो दिखा ही, इसके अलावा दबी-कुचली शोषित और अफसरशाही के बोझ से दबी जनता के मन में कर्तव्य-बोध का एक ऐसा बीज हुआ जिसे सभी ने स्वीकार कर लिया। न जाने कितनी पंक्तियाँ पर रोक लगा दी गई और उन्हें सुरक्षित कर लिया गया। कई पंक्तियों को जला दिया गया, लेकिन इन सब बातों की परवाह न करते हुए वे अनवरत लिखते रहे। उन पर कई तरह के दबाव भी डाले गए और नवाब राय की प्रस्तुति पर उन्हें डराया-धमकाया भी गया। लेकिन इन कोशिशों और दमनकारी नीतियों के आगे प्रेमचंद ने कभी अपनी रचना 'सोजे वतन' पर ब्रिटिश खुफिया विभाग ने आपत्ति जताई और उन्हें अंग्रेजी खुफिया विभाग ने पूछताछ के लिए तलब किया। अंग्रेजी शासन का खुफिया विभाग अंत तक उनके पीछे लगा रहा। लेकिन प्रेमचंद की लेखनी रुकी नहीं, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने 'विप्लव गान' में लिखा:- 'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर को जाए नाश! नाश! हां महानाश!!! की प्रलयंकारी आंख खुल जाए।'

बंकिमचन्द्र चटर्जी का देशप्रेम से ओत-प्रोत 'वन्दे मातरम्' गीत:-' वन्दे मातरम्! सुजलां सुफलां मलयज शीतलां शस्यश्यामलां मातरम्! वन्दे मातरम्! शुभ्र ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम् फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल शोभिनीम् सुहासिनी सुमधुर भाषिणीम् सुखदां वरदां मातरत्। वन्दे मातरम्!'

निराला ने 'भारती! जय विजय करे। स्वर्ग सस्य कमल धरे।।' कामता प्रसाद गुप्त ने 'देश के लिए प्राण क्या हैं। देश खोकर जो जिए तो क्या जिए।' कविवर जयशंकर प्रसाद की कलम भी बोलती है- 'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्राप्त शुद्ध भारती, स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता आह्वानती।' कविवर रामधारी सिंह दिनकर भी कहां खामोशवेन वाले थे। मातृभूमि के लिए हंसते-हंसते प्राणोत्सव करने वाले वीर वीरों व रणबांकुरों की शान में उन्होंने कहा:- 'कमल आज उनकी जय बोल जला अस्थियां बारी-बारी छिटकाई वह चिंगारी जो चढ़ गई पुण्य-वेदी पर लिए बिना गर्दन का मोल कमल आज उनकी जय बोल।'

हिन्दी के अलावा बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी, तमिल और अन्य रचनाओं में भी माइकल मधुसूदन, नर्मद, चिपलुन ठाकर, भारती आदि कवियों और साहित्यकारों ने राष्ट्रप्रेम की भावनाएं जागृत कीं और जनमानस को उजागर किया। कवि गोपालदास नीरज का राष्ट्रप्रेम भी उनकी शताब्दियों में स्पष्ट छवि वाला होता है। जुल्मो-सितम के आगे घुटने न टेकने की प्रेरणा उनके सदियों से प्राप्त होती रही। उन्होंने लोगों को उत्साहित करते हुए लिखा है- 'देखना है जुल्म की रफ्तार बढ़ती है, कहां तक देखना है बम की मस्ती कहां तक।'

आजादी के बाद के पन्नों को स्पष्ट करते हुए, नीरज ने कई रचनाएँ लिखी हैं। 'चांद मछेरों ने मिलकर, सागर की संपदा चुरा ली कांटों ने माली से मिलकर, फूलों की कुर्की करवा ली खुशियों की हड़ताल हुई है, सुख की तालाबंदी हुई आने को आई आजादी, मगर उजाला बंदी है।'

इसी श्रृंखला में शिवमंगल सिंह 'सुमन', रामनरेश त्रिपाठी, रामधारी सिंह 'दिनकर', राधाचरण गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन, राधाकृष्ण दास, श्रीधर पाठक, माधव प्रसाद शुक्ल, नाथूराम शर्मा शंकर, गयाप्रसाद शुक्ल स्नेही (त्रिशूल), सियाराम शरण गुप्त, अज्ञेय जैसे अगणित कवि थे। इसी प्रकार राधाकृष्ण दास, बद्रीनारायण चौधरी, प्रताप नारायण मिश्रा, पंडित अंबिका दत्त व्यास, बाबू रामकिशन वर्मा, ठाकुर जगमोहन सिंह, रामनरेश त्रिपाठी, सुभद्रा कुमारी चौहान एवं बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जैसे रचनाकारों ने राष्ट्रीयता एवं देशप्रेम की ऐसी गंगा बहाई जिसकी तीव्रता तीव्र थी। वेग से जहां विदेशी हुक्मरानों की नींव हिलने लगी, वहीं दुश्मनों के अंत में अपनी पवित्र मातृभूमि के प्यार का जज्बा गहराता चला गया। हिंदी अखबार का प्रकाशन पं. युगलकिशोर शुक्ल के संपादन में कलकत्ता से हुआ।

कानपुर से गणेश शंकर विद्यार्थियों के संपादन में निकले प्रताप, राष्ट्रीय कवि माखनलाल चतुर्वेदी के संपादन में निकले कर्मवीर, कालाकंकर से राजा रामपाल सिंह द्वारा निकाले गए हिंदोस्थान ने राष्ट्रवादियों का मिलन कर आह्वान किया। बंगदूत, अमृत बाजार मैगजीन, केसरी, हिंदू, पायनियर, मराठा, इंडियन मिरर, हरिजन आदि ब्रिटिश हुकूमत की गलत परिस्थितियों की खुल कर आलोचना करते थे।

आज के समय में भी वही धारदार चीज की जरूरत है,
जो जन-जन को आनन्दित कर सके, उन्हें जागृति ला सके। भ्रष्टाचार और अराजकता को दूर करके हर हृदय में भारतीय गौरव-बोध एवं मानवीय मूल्यों का संचार कर सके। आज के हमारे कवियों और साहित्यकारों का यह महानियंत्रक है। हमारे दरबार कवि ढूंढता है, कवि दरबारों को नहीं ढूंढते। यहां पर कवि किसी मोह के वशीभूत नहीं लिखते। यहां तो राष्ट्र जागरण के लिए लिखा जाता है, आज हमारा देश आजाद हो चुका है, पर आज भी हम देशद्रोहियों, भ्रष्टाचारियों और देश के गद्दारों से त्रस्त हैं।

हमारी महान परम्परा और संस्कृति का पतन और दमन करने का प्रयास किया जा रहा है। आज भी देश में जयचंदों की कमी नहीं है। अधिकांश नेता केवल अपने स्वार्थ के लिए कुर्सी पाना चाहते हैं। ऐसे में हमें फिर से ऐसे साहित्यकारों और लेखकों की ज़रूरत है, जो अपनी लेखनी की धार से इन भ्रष्टाचारियों, स्वार्थी, सत्ता लोलुप और देश के गद्दारों के खिलाफ़ एक जन क्रांति पैदा कर सकें, जिसे हम फिर से हमारे देश में सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और बिस्मिल जैसे देश प्रेमी पैदा हुए।[13,14,15]
बस इसीलिए तो कहता हूँ आज़ादी अभी अधूरी है।
मैं उल्लास कैसे मनाऊँ? थोड़े दिन की मजबूरी है॥
दिन दूर नहीं खंडित भारत को पुनः अखंड बना देंगे।
गिलगिट से गारो पर्वत तक स्वतंत्रता पर्व मनाएंगे॥

III. परिणाम

लेखनी प्रत्येक काल में समाज का मार्गदर्शन करती आई है । जब – जब समाज दिग्भ्रमित होता है , राजनीति पथ भ्रष्ट होती है , और जनसाधारण किंकर्तव्यविमूढ़ की अवस्था में आता है , तब- तब लेखनी के सिपाही उठकर लेखनी के माध्यम से इन सब का मार्गदर्शन करते हैं । भारत का स्वतंत्रता आंदोलन भी इसका अपवाद नहीं है । पराधीनता के उस काल में जब सर्वत्र पराभव ही पराभव दिखाई देता था , तब हमारे देश में अनेकों ऐसे क्रांतिकारी और साहित्यकार उत्पन्न हुए , जिन्होंने अपनी पवित्र लेखनी के माध्यम से हमारे समाज का मनोबल और आत्मबल बनाए रखने का प्रशंसनीय कार्य किया । स्वतंत्रता आन्दोलन के इस महायज्ञ में साहित्यकारों ने तत्कालीन समाज में चेतना के ऐसे बीज बोये, जिनके अंकुरों की सुवास से सुवासित वृक्षों ने उस झंझावात को जन्म दिया, जिसने समाज के हर वर्ग को इस आंदोलन में ला खड़ा किया।गोपालदास व्यास के शब्दों में-"आज़ादी के चरणों में जो जयमाला चढ़ाई जाएगी।वह सुनो, तुम्हारे शीशों के फूलों से गूंथी जाएगी।"व्यास जी ने अपने उन महान क्रांतिकारियों को जिन्होंने देश के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर किया ,ऐसे भावपूर्ण शब्दों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर मानो समस्त राष्ट्र की ओर से ही उनकी स्मृतियों पर अपने पुष्प अर्पित कर दिए हैं । यह सच है कि आज जब – जब भी हमारे देश में स्वतंत्रता दिवस या गणतंत्र दिवस की धूम मचती है तो हमें अपने अनेकों महान क्रांतिकारियों और बलिदानियों की स्मृतियां आ घेरती हैं । हमारे चारों ओर उनकी स्मृतियां बड़े प्रश्न चिन्ह बनकर आ खड़ी होती हैं ,और हमसे पूछती है कि आपने हमारे सपनों का भारत बनाने की दिशा में क्या किया ? कितना किया ? और कैसे किया ? जब स्वतंत्रता आंदोलन की हमारे देश में धूम मची थी , तब लगभग हर प्रांत के, लगभग हर भाषा- भाषी क्षेत्र के महान साहित्यकारों , कवियों , लेखकों ने अपने – अपने ढंग से अपने- अपने क्षेत्र के लोगों का आजादी के आंदोलन में कूदने का आवाहन किया । माइकेल मधुसूदन ने बंगाली में, भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने हिन्दी में, नर्मद ने गुजराती में, चिपूलूंपणकर ने मराठी में, भारती ने तमिल में तथा अन्य अनेक साहित्यकारों ने विभिन्न भाषाओं में राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण उत्क़ष्ट साहित्य का सृजन किया। यह ऐसा साहित्य लेखन था जिसे पढ़कर या सुनकर हमारे देश की तत्कालीन युवा पीढ़ी के रक्त में क्रांति का उबाल आ जाता था । उनकी बाजुए फड़कने लगती थीं , और मन राष्ट्र वेदी पर बलि होकर देश के लिए सर्वस्व न्योछावर करने की भावना से ओत प्रोत हो उठता था ।इन साहित्यिक कृतियों ने भारतवासियों के हृदयों में सुधार व जागृति की उमंग उत्पन्न कर दी।स्वतंत्रता के इस आंदोलन में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का नाम अग्रणी है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने तत्कालीन युवा पीढी के भीतर ऐसा उबाल पैदा किया था कि उनके साहित्य को पढ़कर हमारे देश के अधिकांश युवा अंग्रेजी सरकार के अन्याय , प्रतिशोध और

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 2, March 2021 |

अत्याचार के विरुद्ध उठ खड़े हुए थे । उन्हें इस बात का बड़ा क्षोभ था कि अंग्रेज़ भारत की सारी सम्पत्ति लूटकर विदेश ले जा रहे हैं। उनकी लेखनी 'भारत दुर्दशा' से अवगत कराते हुए लिखती है-"रोबहु सब मिलि, अबहु भारत भाई,हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई।"'अंधेर नगरी चौपट राजा' व्यंग्य के माध्यम से भारतेन्दु जी ने तत्कालीन राजाओं की कार्यशैली पर करारा व्यंग किया था । इसके माध्यम से उन्होंने जनता को बताया था कि हमारे वर्तमान शासक घोर स्वार्थी हैं , और जनता के दुख-दर्द से उन्हें कोई लेना देना नहीं है, इसलिए ऐसे स्वार्थी और कर्तव्यविमुख शासकों के विरुद्ध आंदोलन करना देशवासियों का परम धर्म है। ।प्रताप नारायण मिश्र, बद्रीनारायण चौधरी, राधाकृष्ण दास, ठाकुर जगमोहन सिंह, पं. अम्बिका दत्त व्यास, बाबू रामकृष्ण वर्मा आदि समस्त साहित्यकारों ने स्वतंत्रता आंदोलन की धधकती हुई ज्वाला को प्रचंड रूप दिया । उन्होंने अपने स्तर से और अपने ढंग से क्रांति की ज्वाला को तो प्रचंड किया ही साथ ही यह बताने में भी संकोच नहीं किया कि अंग्रेजी सरकार का इस देश के प्रति कोई कर्तव्य नहीं है। वह अपने देश के प्रति कर्तव्यबद्ध है , और इस देश के लोगों को वह केवल और केवल अपना दास मानती है । उसके विचारों में और उसकी कार्यशैली में कहीं पर भी ऐसा भाव नहीं झलकता कि वह लोकतंत्र में विश्वास रखते हुए भारत वासियों के प्रति थोड़ी-सी भी सहानुभूति रखती हैं ।इन सबकी रचनाओं ने राष्ट्रीयता के विकास में बहुत योगदान दिया। बंकिमचन्द्र ने 'आनंद मठ' व 'वंदेमातरम्' की रचना की । वंदे मातरम गीत ने हमारे सभी देशवासियों को एक सूत्र में पिरो कर उस समय ऐसा रोमांस खड़ा किया था कि अंग्रेज सरकार इस शब्द मात्र से ही कांपने लगी थी जहां पर भी वंदे मातरम का गुण सुनाई दे जाता था वही अंग्रेज सरकार अनुमान लगा लेती थी यहां पर निश्चय ही क्रांति की आग दहक रही है। बंकिम बाबू की आनंदमठ ने बंगाल में क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की पाठ्य पुस्तक का कार्य किया।माखन लाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' और सुभद्रा कुमारी चौहान ने राष्ट्र प्रेम को ही मुखरित नहीं किया अपितु स्वतंत्रता आंदोलन में भी भाग लिया। माखन लाल चतुर्वेदी ने फूल के माध्यम से अपनी देशभक्ति की भावना को व्यक्त किया:-"चाह नहीं मैं सुरबाला केगहनों में गूंथा जाऊंचाह नहीं मैं प्रेमी माला में बिंधप्यारी को ललचाऊंमुझे तोड़ लेना ए वन मालीउस पथ पर देना फेंकमातृभूमि पर शीश चढ़ानेजिस पथ जाएं वीर अनेक।"राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने भारत-भारती के द्वारा राष्ट्रीयता का प्रचार-प्रसार कर भारत के रणबांकुरों को स्वतंत्रता आंदोलन में कूदने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बहुत सरल शब्दों में देश के लोगों की चेतना को झकझोर कर रख दिया था । उनकी बनाई देश भक्ति की कविताओं को लोग आज भी पढ़ कर रोमांचित हो उठते हैं। उन्होंने सोई हुई भारतीयता को जगाते हुए कहा- "जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है वह नर नहीं, पशु निरा है और मृतक समान है।[16,17,18]"तत्कालीन साहित्यकारों में शिरोमणि लेखक, क़लम के सिपाही मुंशी प्रेमचंद्र को यदि आज इस अवसर पर स्मरण नहीं किया गया तो भी यह लेख अपूर्ण ही माना जाएगा । मुंशी प्रेमचंद जी हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्यकारों की ओर से वह हस्ताक्षर हैं जिन पर हम सबको गर्व और गौरव की अनुभूति होती है । इस महान साहित्यकार की रचनाओं ने मृतप्राय: लोगों में भी प्राण फूंक दिए। उन्होंने अपने अधिकारों के प्रति उदासीन लोगों को जगाने और क्रूर तानाशाही के विरुद्ध उठ खड़े होने का सफल आवाहन किया जो अभी तक क्रूर तानाशाही के सामने बोलना तक उचित नहीं मानते थे और क्रूर तानाशाही के अत्याचारों को सहना जिनकी नियति बन चुका था । मुंशी प्रेमचन्द की न जाने कितनी रचनाओं पर रोक लगी, न जाने कितना साहित्य जलाने की कोशिश की गई , परन्तु उनकी लेखनी सदा एक सच्चे क्रांतिकारी की भांति स्वतंत्रता आंदोलन में विस्फोटक का कार्य करती रही।मुंशी जी के पीछे अंग्रेज़ सरकार का गुप्तचर विभाग लगा रहा तथा उनकी रचना 'सोज़े वतन' के विषय में उन्हें तलब किया गया। नवाब राय की स्वीकृति पर उन्हें डराया-धमकाया गया तथा 'सोज़े वतन' की प्रतियां जला दी गई , परन्तु एक सच्चे क्रांतिकारी की भांति अंग्रेज़ों की इस दमनकारी नीति से प्रभावित हुए बिना मुंशी प्रेमचंद की लेखनी इस आंदोलन में वैचारिक क्रांति उगलती रही।"मैं विद्रोही हूंजग में विद्रोह कराने आया हूंक्रांति का सरल सुनहरा राग सुनाने आया हूं"का शंख बजाने वाले कवि नीरज की उक्त पंक्तियों से ही उनका स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान स्पष्ट झलकता है। लोगों को अत्याचार के आगे न झुकने की प्रेरणा देते हुए नीरज ने कहा था-"देखना है ज़ुल्म की रफ़्तार बढ़ती है कहां तक।देखना है बम की बौछार है कहां तक।।"इसी प्रकार 'दिनकर' की तूलिका ने ऐसे ही वीरों के स्वागत में लिखा-"क़लम आज उनकी जय बोलजला अस्थियां बारी-बारीछिटकायी जिसने चिंगारीजो चढ़ गए पुण्य वेदी परलिए बिना गर्दन का मोलक़लम आज उनकी जय बोल।"कविवर प्रसाद ने लेखनी के द्वारा जनमानस को यह कहकर उद्वेलित किया- "हिमाद्रि तुंग श्रृंग सेप्रबुद्ध शुद्ध भारतीस्वयंप्रभा समुज्जवलास्वतंत्रता पुकारती।"श्याम लाल गुप्त परिषद की लेखनी के साथ तो हर तरफ़ यही आवाज़ गूंज उठी-"विजयी विश्व तिरंगा प्याराझंडा ऊंचा रहे हमारा।"मित्रों ! आज देश की जो परिस्थितियां बनी हुई है , उनमें भी सर्वत्र एक आवाहन है , एक चुनौती है ,चैलेंज है । हमारे लिए सर्वत्र एक पुकार है , ललकार है , एक आवाहन है – क्रांति का ।और उठ खड़े होकर देशद्रोहियों , देश विरोधियों और राष्ट्रघातियों को कड़ा पाठ पढ़ाने का । मां भारती आज भी बंधनों में जकड़ी खड़ी है । कहीं ईसाइयत इसको जकड़ रही हैं , तो कहीं इस्लाम अपना विकराल रूप दिखा रहा है । देशद्रोहियों को राजनीति के गद्दार लोग अपना समर्थन देकर यह स्पष्ट कर रहे हैं कि देश में आज भी जयचंद की परंपरा बनी हुई है । ऐसे में फिर हमें किसी दिनकर की, किसी मैथिलीशरण गुप्त की, किसी प्रेमचंद की आवश्यकता है । फिर हमें उनकी लेखनी से निकलने वाले गरम लहू से बनने वाले सुभाष चंद्र बोस की आवश्यकता है , भगत सिंह की आवश्यकता है ,चंद्रशेखर और बिस्मिल की आवश्यकता है । यज्ञ वेदी फिर सजी हुई है , क्रांति की धूम के लिए । समझ लो कि स्वतंत्रता आंदोलन को तैयार करने की सारी भूमिका बन चुकी है।अग्नि प्रचंड करने भर की देर है । शत्रु फिर फन फैला रहे हैं ।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 2, March 2021 |

IV. निष्कर्ष

यदि हम शांत रह गए या इस विकराल स्थिति के विरुद्ध उठ खड़े होने का साहस खो बैठे तो बड़े संघर्ष के पश्चात जिस आजादी को प्राप्त किया था , वह हमसे फिर गुम हो सकती है । आज के हमारे कवियों का और साहित्यकारों का यह महती दायित्व बनता है कि वह इस देश के बारे में सोचें और उसी परंपरा को जीवित रखें जो मैथिलीशरण गुप्त की परंपरा है , प्रेमचंद की परंपरा है , नीरज की परंपरा है, और यह स्मरण रखें कि यहां पर राम का चरित्र लिखने के लिए वाल्मीकि तब मिलता है जब राम इस योग्य होता है कि कोई उसकी बारे में लेखनी चला सके। कहने का अभिप्राय है कि यहां पर चाटुकारिता को अपना उद्देश्य नहीं माना जाता और दरबारी कवि होना यहां पर अभिशाप है ।यहाँ दरबार कवि ढूंढता है , कवि दरबारों को नहीं ढूंढते । यहां पर कवि किसी मोह के वशीभूत होकर नहीं लिखते । यहां तो राष्ट्र जागरण के लिए लिखा जाता है , राष्ट्रोत्थान के लिए लिखा जाता है , राष्ट्र – उद्धार के लिए लिखा जाता है । क्योंकि सब कवि अपना यह दायित्व समझते हैं कि राष्ट्र जागरण , राष्ट्रोद्धार और राष्ट्रोत्थान ही उनकी लेखनी का एकमात्र व्रत है ,एकमात्र संकल्प है ।[19]

संदर्भ

1. Zakaria, Anam. "Remembering the war of 1971 in East Pakistan". Al Jazeera (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2020-01-18.
2. ↑ "Vasco da Gama reaches India". HISTORY (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2020-01-18.
3. ↑ "Sikh Wars | Anglo-Sikh, Punjab, Maharaja Ranjit | Britannica". www.britannica.com (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2020-01-18.
4. ↑ "P Chidambaram releases documentary film on Alagumuthu Kone". The Times of India. 2012-12-24. आइ°एस°एस°एन° 0971-8257. अभिगमन तिथि 2020-01-19.
5. ↑ Gupta, Sanjukta Das; Basu, Raj Sekhar (2012). Narratives from the Margins: Aspects of Adivasi History in India (अंग्रेज़ी में). Primus Books. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-93-80607-10-8.
6. ↑ "Tribal Rebellions during British India: A Complete Summary". Jagranjosh.com (अंग्रेज़ी में). 2018-03-20. अभिगमन तिथि 2020-01-19.
7. ↑ Gupta, Sanjukta Das (2011). Adivasis and the Raj: Socio-economic Transition of the Hos, 1820-1932 (अंग्रेज़ी में). Orient Blackswan. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-81-250-4198-6.
8. ↑ Jha, Jagdish Chandra (1967-01-01). The Bhumij Revolt (1832-33): (ganga Narain's Hangama Or Turmoil) (अंग्रेज़ी में). Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Limited. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-81-215-0353-2.
9. ↑ Jha, Jagdish Chandra (1958). "The Kol Rising of Chotanagpur (1831-33)—Its Causes". Proceedings of the Indian History Congress. 21: 440–446. आइ°एस°एस°एन° 2249-1937.
10. ↑ "Remembering Santal Hul: The First Struggle Against Imperialism". thewire.in (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2020-01-19.
11. ↑ Singh, Kumar Suresh (2002). Birsa Munda and His Movement, 1872-1901: A Study of a Millenarian Movement in Chotanagpur (अंग्रेज़ी में). Seagull Books. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-81-7046-205-7.
12. ↑ A.K.Dhan (2017-08-29). BIRSA MUNDA (अंग्रेज़ी में). Publications Division Ministry of Information & Broadcasting. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-81-230-2544-5.
13. ↑ Staff, T. N. M. (2017-01-03). "Remembering Queen Velu Nachiyar of Sivagangai, the first queen to fight the British". The News Minute (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2020-01-19.
14. ↑ "Velu Nachiyar, Jhansi Rani of Tamil Nadu". The Times of India. 2016-03-17. आइ°एस°एस°एन° 0971-8257. अभिगमन तिथि 2020-01-19.
15. ↑ Rajesh, K. Guru. Sarfarosh: A Naadi Exposition of the Lives of Indian Revolutionaries (अंग्रेज़ी में). Notion Press. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-93-5206-173-0.
16. ↑ "PAIK REBELLION | Welcome to Khordha District Web Portal | India" (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2020-01-19.
17. ↑ O'Kell, Robert P. (2014-01-23). Disraeli: The Romance of Politics (अंग्रेज़ी में). University of Toronto Press. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-1-4426-6104-2.
18. ↑ Patel 2008, पृष्ठ 56
19. ↑ Nelson, Dean (7 July 2010). "Ministers to build a new 'special relationship' with India". The Daily Telegraph. मूल से 7 फ़रवरी 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 नवंबर 2016.